नाम - डॉ. रोशनी मिश्रा

महाविद्यालय का नाम - दुर्गा महाविद्यालय

संकाय - कला

पदनाम - सहायक प्राध्यापक

विषय - हिंदी

शीर्षक - रस के अंगों का तात्विक विवेचन

"रस के अंगों का तात्विक विवेचन"

रस की परिभाषा – रस का सामान्य अर्थ रस है। इस अर्थ में वह काव्य द्वारा प्राप्त आनंद है। काव्य शास्त्र के विद्वानों के मतों का सारांश रूप भावमूलक काव्य सौंदर्य की अनुभूति रस है। काव्यानंद को लक्ष्य करके रस का सर्वप्रथम विवेचन भरत मुनि कृत नाट्य शास्त्र में प्राप्त होता है। उन्होंने 'नाट्यशास्त्र' में कहा है – "विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगाद् रस निष्पत्ति:।" अर्थात विभाव अनुभाव व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। इस परिभाषा के अनुसार रस के चार अवयव है – स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव।

स्थायी भाव — आचार्यों के मत से हमारे मन के प्रभावित होने के मुख्यतया नौ प्रकार होते हैं। अर्थात नौ स्थायी भाव हैं, जिसके जागृत और परिपुष्ट होने पर एकाग्र होकर मन आनंद मग्न हो जाता है। स्थायी भाव हमेशा हमारे चित्त में रहता है। इसी लिए इसे स्थायी भाव कहा जाता है। आचार्य भरत ने रस की संख्या आठ मानी थी अर्थात उन्होंने स्थायी भाव की संख्या भी आठ मानी थी बाद में शांत और वात्सल्य भक्ति भाव को भी ~~स्थायी भाव~~ भा रस माना गया। इस आधार पर निर्वेद भक्ति और वात्सल्य को भी स्थायी भाव की श्रेणी में लिया गया।

इस प्रकार 11 स्थायी भाव और 11 रस की संख्या है। —

स्थायी भाव और रसों के नाम इस प्रकार है-

स्थायी भाव	रस
① रति	श्रृंगार
② हास	हास्य
③ उत्साह	वीर
④ अमर्ष (क्रोध)	रौद्र
⑤ भय	भयानक
⑥ विस्मय	अद्भुत
⑦ शोक	करुण
⑧ जुगुप्सा	विभत्स
⑨ निर्वेद	शांत
⑩ वात्सल्य	वात्सल्य
⑪ भक्ति	भक्ति

यद्यपि वात्सल्य के मूल में भी प्रेम है, और प्रेम का श्रृंगार का ही अंग है। इसी प्रकार भक्ति रस को पूज्य बुद्धि समन्वित रति होने के कारण श्रृंगार का ही भाव सिद्ध होता है।

विभाव - विभाव के दो भेद है - आलंबन विभाव और उद्दीपन विभाव।

(क) आलंबन विभाव → जिसका आलंबन प्राप्त करके स्थायी भाव इत्यादि मनोविकार उत्पन्न होते हैं, आलंबन विभाव कहलाते हैं। उदाहरण के लिए, हम रौद्र रस को लेते हैं, वह व्यक्ति प्रायः शत्रु जिसको देखकर क्रोध उत्पन्न हो। वह 'आलंबन' कहलाता है। जिसके मन में क्रोध आदि मनोविकार उत्पन्न हो वह 'आश्रय' कहलाता है।

(ख) उद्दीपन विभाव - जिन वस्तुओं या परिस्थितियों को देखकर स्थायी भाव उद्दीप्त या

जागृत होते हैं, वे उद्दीपन भाव कहलाते हैं। आलंबन की चेष्टाएँ भी उद्दीपन के अंतर्गत आती हैं। उदाहरण के लिए शत्रु के संपूर्ण वचन या चुनौति भरे वाक्य आदि उद्दीपन भाव के अंतर्गत आते हैं।

अनुभाव — भाव का बोध कराने वाले अवयव अनुभाव हैं। इन्हीं के द्वारा रति आदि स्थायी भाव काव्य में शब्दों द्वारा तथा नाटक में आश्रय की चेष्टाओं द्वारा प्रकट होते हैं — "अनुभावो भाव बोधक:।" संक्षेप में आश्रय की चेष्टाओं को अनुभाव कहते हैं।

हाव — नायक : नायिका परस्पर आलंबन आश्रय होते हैं। जैसे श्रृंगार रस में नायिका की चेष्टाओं को हाव कहते हैं। इस प्रकार हावों को उद्दीपन विभाव के अंतर्गत माना जाता है।

अनुभावों के चार भेद होते हैं — ① कायिक अनुभाव ② आहार्य अनुभाव ③ मानसिक अनुभाव ④ सात्विक अनुभाव।

कायिक अनुभाव — मनोभावों के अनुसार आँख, भौंह, हाथ आदि शारीरिक चेष्टा कायिक अनुभाव के ~~अंत~~ अंतर्गत आते हैं।

आहार्य — भाँति-भाँति के वेश-धारण को आहार्य अनुभाव कहते हैं।

मानसिक अनुभाव — अंत:करण की भावना के अनुसार मन मानस में आमोद-प्रमोद, हर्ष-विषाद आदि की जो तरंगें उठती हैं, उन्हें मानसिक अनुभाव कहते हैं।

सात्विक अनुभाव — आत्मा में अंतर्भूत रस को प्रकाशित करने वाला अंत:करण

का धर्म विशेष सत्व कहलाता है। इसी सत्व गुण से उत्पन्न शरीर के स्वाभाविक अंग विकार को सात्विक अनुभाव कहते हैं। इनकी संख्या आठ मानी गई है —

(1) स्तम्भ (2) स्वेद (3) रोमांच (4) स्वर भंग (5) कंप (6) वैवर्ण्य (7) अश्रु (8) प्रलय।

व्यभिचारी भाव — चिंता, अभिलाषा आदि चित्त की वृत्तियों को व्यभिचारी भाव कहा जाता है। इनको संचारी भाव भी कहते हैं। एक ही संचारी भाव एक से अधिक रस के अंतर्गत हो जाते हैं। विविध आचरण करने वाले पुरुष को व्यभिचारी कहते हैं। इसी आधार पर संचारी भाव को व्यभिचारी भाव कहते हैं। संचारी शब्द 'सम' उपसर्ग और 'चर' धातु से मिलकर बना है। इसका अर्थ है सब भावों को भली प्रकार रसत्व की ओर ले जाने वाला या साथ-साथ चलने वाला। जो भाव स्थायी भावों में विद्यमान रहकर या उनके साथ-साथ उन्हें उपयोगी एवं पुष्ट बनाते रस रूप तक पहुँचाते तथा जल तरंग वत उन्हीं में उत्पन्न होकर उन्हीं में विलीन हो जाते हैं, उन्हें संचारी भाव कहते हैं। ये स्थायी भावों के पोषक और सहायक होते हुए भी रस-सिद्ध काल तक स्थिर नहीं रहते हैं। ये अवस्था विशेष में उत्पन्न होते हैं और अपना प्रयोजन पूरा होने पर स्थायी भाव की उचित सहायता करके लुप्त हो जाते हैं।

अंतः संचारी या मन संचारी इनकी संज्ञा है। इनकी संख्या कुल 33 मानी गई है। —

(1) निर्वेद (2) ग्लानि (3) शंका, (4) असूया (5)

मद (6) श्रम (7) आलस्य (8) दीनता (9) चिंता

(10) मोह (11) स्मृति (12) धृति (13) व्रीड़ा (14) चपलता

(15) हर्ष (16) आवेग (17) जड़ता (18) गर्व (19) विषाद

(20) औत्सुक्य (21) निद्रा (22) अपस्मार (23) स्वप्न

(24) विबोध (25) अमर्ष (26) अवहित्था (27) उग्रता (28) मति

(29) व्याधि (30) उन्माद (31) मरण (32) त्रास (33) वितर्क ||